Answers to RHB–DS1/Set–3

1. (*i*) (क) मनुष्य स्वतंत्र रहता है।

(*ii*) (घ) स्वाधीनता के सुख को

(*iii*) (ग) वह अपने सारे कार्य दूसरों के निर्देशानुसार करता है।

(*iv*) (ग) स्वतंत्र व्यक्ति को किसी से आज्ञा नहीं लेनी पड़ती है।

(*v*) (घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

2. (*i*) (ख) कठिन परिश्रम

(*ii*) (घ) आलसी होना

(*iii*) (ख) कठिन परिश्रम करने वाले का

(*iv*) (ग) इससे समय की हत्या होती है।

(*v*) (क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।

3. (*i*) (क) संज्ञा पदबंध

(*ii*) (क) पहले बड़े-बड़े दालानों-आँगनों में सब मिल-जुलकर रहते थे।

(*iii*) (ख) सर्वनाम पदबंध

(*iv*) (ग) शांत कर रहा था

(*v*) (क) संज्ञा पदबंध

4. (*i*) (ख) वर्सोवा में जहाँ आज मेरा घर है, पहले यहाँ दूर तक जंगल था।

(*ii*) (क) सरल वाक्य

(*iii*) (घ) नेचर के गुस्से का एक नमूना कुछ साल पहले बंबई (मुबंई) में देखने को मिला था और यह नमूना बहुत डरावना था।

(*iv*) (ख) 1–(*iii*), 2–(*i*), 3–(*ii*)

(*v*) (क) सरल वाक्य

5. (*i*) (ख) (*iii*) और (*iv*)

(*ii*) (घ) अमृत रूपी वचन – कर्मधारय समास

(*iii*) (ख) नीति में निपुण – तत्पुरुष समास

(*iv*) (क) आत्म पर विश्वास

(*v*) (घ) बहुव्रीहि समास

6. (*i*) (क) चींटी के पर निकलना – छोटे व्यक्ति के द्वारा घमंड करना

(*ii*) (ग) ठेस लगना

(*iii*) (घ) बड़ा संकट आना

(*iv*) (ख) भौंहें चढ़ाना

(*v*) (ग) मूर्ख को उपदेश देना

(*vi*) (क) गागर में सागर भरना

7. (*i*) (ख) दर्शन, स्मरण और भक्ति रूपी जागीर तीनों सुखों की प्राप्ति

(*ii*) (ख) श्रीकृष्ण के लिए

(*iii*) (घ) वे श्रीकृष्ण के निकट रहना चाहती हैं।

(*iv*) (क) दास्य भक्ति

(*v*) (ग) हमें निस्वार्थ भाव से ईश्वर की भक्ति करनी चाहिए।

8. (*i*) (ख) प्रेम तथा अनुभव को

(*ii*) (क) अहंकार का कभी अंत नहीं होता है।

9. (*i*) (घ) (*ii*), (*iii*) और (*iv*)

(*ii*) (क) टी-सेरेमनी में

(*iii*) (ख) दूसरों से प्रतिस्पर्धा करने के कारण ज़िंदगी की रफ्तार बढ़ जाती है, जिससे मानसिक रोग होता है।

(*iv*) (ख) तनाव का

(*v*) (घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

10. (*i*) (ख) (*ii*) और (*iv*)

(*ii*) (ग) उसने अपनी आधी जायदाद कंपनी को दे दी थी।

11. (क) प्रेम सबको जोड़ता है। 'तताँरा-वामीरो कथा' के संदर्भ में यह कथन सटीक प्रतीत होता है। तताँरा पासा गाँव का था और वामीरो लपाती गाँव में रहती थी। निस्वार्थ भाव से दोनों एक-दूसरे से प्रेम करते थे। दोनों के गाँवों के बीच संबंध अच्छे न होने के कारण उन दोनों के विवाह पर काफी विरोध हुआ। अपमानित तताँरा ने अपने क्रोध का शमन करने के लिए अपनी विलक्षण तलवार से धरती में रेखा खींच दी जिससे धरती दो टुकड़ों में बँट गई। वह उसी खाई में गिरकर बेहोश हो गया। उसका कुछ पता नहीं चला। वामीरो तताँरा का वियोग सहन नहीं कर सकी और उसका भी अंत हो गया। दोनों के इस दुखद अंत तथा बलिदान से प्रभावित और दुखी होकर गाँव वाले ने आपसी दुश्मनी को भूलकर मित्रतापूर्ण व्यवहार को अपनाया। इस प्रकार दोनों के प्रेम ने ही दो गाँवों की शत्रुता को मिटाया।

(ख) धरती पर सभी जीवों का चाहे वे पशु-पक्षी हों या मनुष्य सभी का बराबर का अधिकार है परंतु अपनी बुद्धि के बल से मनुष्य ने सब पर अपना एकाधिकार स्थापित कर लिया है। नदियों तथा तालाबों को मनमाने ढंग से इस्तेमाल कर दूषित कर दिया है जिसके कारण पशु-पक्षियों को संकट का सामना करना पड़ रहा हैं। जंगलों को काटकर उसके स्थान पर अपना बसेरा बना लिया है जिसके कारण पशु-पक्षियों का आशियाना छिन गया है। इस प्रकार के स्वार्थी प्रवृत्ति के कारण ही प्रकृति का असंतुलन बढ़ता जा रहा है। बेवक्त की बरसातें, बर्फबारी, अत्यधिक गर्मी तथा सर्दी, तूफान तथा समुद्री सैलाब से प्रकृति तथा जीवों को भी नुकसान पहुँचता है। सभी मनुष्यों को यह समझना होगा कि धरती पर सभी का अधिकार है। अपनी बुद्धि का उपयोग केवल स्वयं के लिए न कर पशु-पक्षियों तथा प्रकृति की सुरक्षा के लिए भी किया जाना चाहिए। तभी प्रकृति का संतुलन बना रहेगा और मनुष्य का भविष्य सुरक्षित रह सकेगा।

(ग) 'तीसरी कसम' फ़िल्म के निर्माता–निर्देशक शैलेंद्र एक संवेदनशील, भावुक तथा आदर्शवादी कवि थे। अपने इन्हीं आदर्शों को उन्होंने पूरा ईमानदारी तथा सच्चाई के साथ फ़िल्म में उतारा। अपने गीतों के माध्यम से शैलेंद्र ने जनता को सच्चाई तथा वास्तविकता से रूबरू करवाया। एक फ़िल्म निर्माता के रूप में शैलेंद्र ने अपने जीवन के आदर्श तथा भावनाओं को पूरी शिद्दत के साथ इस फ़िल्म में उतारा था। इस फ़िल्म को समझ पाना हर किसी के वश की बात नहीं थी। शैलेंद्र ने यह फ़िल्म धन लिप्सा के कारण नहीं बनाई थी बल्कि उन्होंने यह फ़िल्म आत्म संतुष्टी के लिए बनाई थीं। उन्होंने वास्तविक जीवन की मार्मिकता को अत्यंत सार्थकता से इस फ़िल्म में उतारा था। फ़िल्मी दुनिया का हिस्सा होते हुए भी वे इसकी चकाचौंध से कोसों दूर थे। फ़िल्मी दुनिया की नकारात्मकता तथा धन और यश लिप्सा को उन्होंने स्वयं पर हावी नहीं होने दिया था।

12. (क) कवि वीरेन डंगवाल जी द्‌वारा रचित कविता 'तोप' हमें 1857 के ऐतिहासिक युद्‌ध की याद दिलाता है। यह तोप हमें विरासत में मिली है। विरासत में मिली चीजों की बड़ी सँभाल होती है क्योंकि ये चीजें हमारी धरोहर हैं, जिन्हें देखकर या जानकर हमें अपने देश और समाज की प्राचीन उपलब्धियों का ज्ञान तथा जानकारी होती है। ये चीजें हमें बताती हैं कि हमारे पूर्वजों से कब और क्या चूक हुई थी, जिसके कारण देश की कई पीढ़ियों को भयंकर परिणामों का सामना करना पड़ा। यह तोप हमें यह भी याद दिलाता है कि किस प्रकार हमारे देशभक्तों ने आजादी पाने के लिए अंग्रेजी सत्ता का वीरतापूर्वक सामना किया था। हमारे विचार से विरासत में मिली चीजों को सँभाल कर रखना चाहिए। यह शत-प्रतिशत उचित है। नई पीढ़ी अपने पूर्वजों के बारे में जाने, उनके अनुभवों से कुछ सीखें, इसी उद्‌देश्य से विरासत में मिली चीजों को सँभालकर रखना चाहिए।

(ख) 'मनुष्यता' कविता के माध्यम से कवि मैथिलीशरण गुप्त जी ने मानव मात्र को त्याग, प्रेम, बलिदान, परोपकार, सत्य, अहिंसा जैसे मानवीय गुणों को अपनाने का संदेश दिया है। मानव जीवन एक विशिष्ट जीवन है। अतः अपने से पहले दूसरों की चिंता करते हुए अपनी शक्ति, अपनी बुद्‌धि और अपनी वैचारिक शक्ति का सदुपयोग करना मानव का कर्तव्य है। प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि मानवीय एकता, सहानुभूति, सद्‌भाव, उदारता और करुणा का संदेश देना चाहता है। वह चाहता है कि मनुष्य समस्त संसार में अपनत्व की अनुभूति करे। वह दीन-दुखियों, ज़रूरतमंदों के लिए बड़े-से-बड़ा त्याग करने के लिए तत्पर रहे। वह पौराणिक कथाओं के माध्यम से विभिन्न महापुरुषों जैसे दधीचि, कर्ण, रंतिदेव के अतुलनीय त्याग से प्रेरणा ले। ऐसे सत्कर्म करे जिससे मृत्यु उपरांत भी लोग उसे याद करें। उसका यश मानव मात्र के हृदय में जीवित रहे।

(ग) हमारी पाठ्यपुस्तक में 'मीरा के पद' में कवयित्री मीराबाई जी ने अपने आराध्य के प्रति अपनी भक्ति का परिचय दिया है। मीरा जी के मन में अपने आराध्य श्री कृष्ण के प्रति समर्पण का भाव है। मीराबाई ने सभी भौतिक सुखों की इच्छा को त्यागकर अपने आराध्य को पाने की, उनके दर्शन करने की इच्छा को व्यक्त किया है। मीराबाई श्री कृष्ण को पाने के लिए उनकी चाकरी करने के लिए तत्पर हैं। अर्थात वे अपने आराध्य की सेवा करने के लिए उनके समीप रहना चाहती हैं। मीराबाई की भक्ति भावना ही उनकी जागीर तथा संपत्ति है। इस संपत्ति के सुख के लिए वे संसार के सभी सुखों को त्यागने के लिए भी तत्पर हैं। अपने आराध्य के प्रति एक भक्त को पूर्ण रूप से समर्पित होकर ऐसी ही निस्वार्थ भक्ति में लीन हो जाना चाहिए। तभी ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है।

13. (क) लेखक का यह कथन गाँव की पिछड़ी मानसिकता को दर्शाता है। गाँव में यदि गाँव की प्रगति तथा उत्थान के लिए कोई कार्य हुआ होता तो निसंदेह यह गाँव की उन्नति में सहायक होता। परंतु यह लोगों का अंधविश्वास ही तो है कि वे अपने लाभ-हानि का जिम्मेदार ठाकुरबारी को मानते हुए अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए उसमें चढ़ावा चढ़ाते हैं। यह धन का अपव्यय ही तो है। यदि इसी धन को समाज सुधार के किसी कार्य में लगाते हुए गरीब तथा बेसहारा बच्चों के लिए उचित शिक्षा का प्रबंध करते हुए विद्‌यालय निर्माण के कार्य में लगाया जाता तो यह सर्वहित में होता। गाँव वालों के अंधविश्वास का ही परिणाम था कि ठाकुरबारी में आपराधिक गतिविधियाँ होने लगीं। वहाँ के महंत हरिहर काका जैसे सीधे-साधे लोगों को बहला-फुसलाकर उनकी जमीन हथियाकर ठाकुरबारी के नाम करवा लेना चाहते थे।

(ख) लेखक गुरदयाल सिंह जी ने बचपन के स्वर्णिम क्षणों को सपनों के समान माना है। बचपन का समय जीवन में बहुत महत्व रखता है। इस समय बच्चों का निश्छल हृदय अपनी ही दुनिया में खुश रहता है। इस समय न तो उन्हें समाज की कठिनाइयाँ झेलनी पड़ती हैं और न ही भविष्य की कोई चिंता रहती है। वे पूरी तरह से वर्तमान समय का आनंद उठाते हैं। दुनिया के छल-प्रपंच से दूर बच्चे अपने लिए एक अलग ही दुनिया गढ़ लेते हैं। लेखक ने अपने समय की, अपने बचपन की जिन घटनाओं, क्रियाकलापों तथा मनोभावों का उल्लेख पाठ में किया है, वे आज भी प्रासंगिक है। पाठ को पढ़ते हुए हम इसी का हिस्सा बन जाते हैं तथा स्वयं को उस समय में महसूस करने लगते हैं। बचपन का यह विशेष समय जीवन में फिर कभी लौट कर नहीं आता है। बचपन की परिस्थितियाँ, मौज-मस्ती, खुशियाँ तथा मन की भावनाएँ जीवन में विशेष स्थान रखती हैं जिनका सामना दोबारा नहीं हो पाता है। इन्हीं सब कारणों से लेखक ने बचपन के दिनों को सपने के समान कहा है।

(ग) टोपी को अपने सीधे और सच्चे व्यवहार के कारण अपने ही घर में अपमानित तथा दंडित होना पड़ता था। उसका निश्छल तथा स्वच्छ हृदय झूठ की भाषा नहीं जानता था। घर में 'अम्मी' शब्द बोलने पर उसे डाँटा गया। घर वालों द्वारा उस पर झूठा इल्जाम लगाकर मारा भी गया। उसकी तथा इफ़्फ़न की मित्रता पर प्रतिबंध लगाया गया परंतु मार खाकर भी उसने इफ़्फ़न से दोस्ती न रखने वाली बात को स्वीकार नहीं किया। दरअसल उसका हृदय सजा पाकर भी इफ़्फ़न के प्रेम और अपनेपन को खोना नहीं चाहता था। उसका सच्चा हृदय स्वार्थ के भाव से कोसों दूर था। उसने स्वार्थ तथा छल को कभी अपनाया ही नहीं। यही कारण था कि घरवाले कभी उसे समझ ही नहीं सके और उसे मन में भी घरवालों के प्रति अलगाव का भाव बना रहा। पूरी दुनिया में इफ़्फ़न के अलावा कोई और उसका मित्र नहीं बन सका। इससे उसके पवित्र और साफ व्यक्तित्व का बोध होता है।

14. (क) **सदाचार**

आचरण (सदाचरण) ही मनुष्य का परम धर्म है। सदाचार का पालन करने वाले सदाचारी व्यक्ति मानवीय गुणों से युक्त होते हैं। दया, ममता, परोपकार, सहयोग की भावना उनमें विद्यमान होती है। वे सबसे प्रेम करते हैं,सबको सहयोग देते हैं, वे न केवल अपने परिवार से प्रेम करते हैं, बल्कि अपने समाज, देश और विश्व से भी प्रेम करते हैं। वे प्राणी मात्र के कल्याण के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। परिस्थितियाँ कितनी भी प्रतिकूल क्यों न हो उनके मन में आशा की लौ कभी बुझती नहीं है। वे अपने सकारात्मक तथा आशावादी दृष्टिकोण के बल से अंततः सफलता अवश्य प्राप्त कर लेते हैं। समाज को यदि शाश्वत मूल्य तथा आदर्श किसी ने दिया है तो वह सदाचारी लोगों का ही दिया हुआ है।

(ख) **कोरोना : महामारी और बदलाव**

कोरोना महामारी एक ऐसी समस्या है जिससे आज पूरा देश जूझ रहा है। वर्ष 2020 की शुरुआत से ही इस महामारी ने चारों ओर विध्वंश फैलाना प्रारंभ कर दिया था। हजारों-लाखों लोग इसकी चपेट में आने लगे थे। लगभग सभी देश इस बीमारी से निजात पाने में असमर्थ थे। इस बीमारी का कोई इलाज न होने के कारण बीमारी से ग्रसित लोगों की मृत्यु दर में बढ़ोतरी होने लगी। सरकार ने इस बीमारी को रोकने के लिए देश भर में पूर्ण लॉकडाउन घोषित कर दिया। अनेक देशों ने भी इसका अनुकरण किया। इसके परिणाम स्वरूप लोगों को घर पर रहकर रोजगार संबंधित कार्य करने पड़े। बच्चों को तथा बुजुर्गों को इस बीमारी से विशेष खतरा होने के कारण बच्चों का विद्यालय जाना बंद हो गया। ऐसे में घर पर रहकर ही उनकी पढ़ाई को चलाने का इंतजाम करते हुए ऑनलाइन पढ़ाई की व्यवस्था कराई गई। घर बैठे सभी कार्यों को सुचारु रूप से चलाने के लिए इंटरनेट का जबरदस्त प्रचलन हुआ। सभी कार्य इंटरनेट के माध्यम से होने लगे। लोगों के रहन-सहन, उनके कार्य करने के तरीके, बच्चों के जीवन पर इसका जबरदस्त प्रभाव पड़ा है।

(ग) **'बिना विचारे जो करे, सो पाछे पछताए'**

'बिना विचारे जो करे, सो पाछे पछताए' इस लोकोक्ति का अर्थ यह है कि जो व्यक्ति बिना सोचे-समझे किसी कार्य को करता है, तो उसे बाद में पछताना पड़ता है। मनुष्य एक बुद्धिजीवी प्राणी है। संसार में व्याप्त सभी जीवों में केवल मनुष्य ही है जिसमें सही और गलत को सोचने की क्षमता होती है। परंतु फिर भी मनुष्य जीवन में कई ऐसी गलतियाँ करता चला जाता है जिसे बाद में सुधारा नहीं जा सकता है। ऐसे में वह पश्चाताप के अलावा और कुछ नहीं कर सकता है। इसका मुख्य कारण होता है, गंभीरता का अभाव। जीवन में गंभीरता बहुत आवश्यक है। जो लोग गंभीर, विवेकी और धैर्यवान होते हैं, वे अच्छी तरह से सोचने-समझने के बाद ही किसी भी काम को शुरू करते हैं और पछताने से बच जाते हैं। बिना सोचे-समझे काम करने वाला व्यक्ति बाद में पछताता है क्योंकि कुछ कार्य ऐसे होते हैं जिन्हें बाद में सुधारा नहीं जा सकता। अतः समय रहते सोच-समझकर कार्य करना ही उचित है। बिना विचारे कार्य करने वाले व्यक्ति को जीवन में कई बार अकसर असफलताओं का सामना करना पड़ता है।

15. (क) सेवा में

शिक्षामंत्री

अ०ब०स नगर

नई दिल्ली-110004

दिनांक : 2 जून, 20xx

विषय : क्षेत्र में विद्यालय खुलवाने हेतु आवेदन।

महोदय,

मैं आपका ध्यान अपने क्षेत्र अ०ब०स० नगर की शिक्षा व्यवस्था की कमी को ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ।

हमारे क्षेत्र में कोई सरकारी तथा मान्यता प्राप्त विद्यालय न होने के कारण बच्चों को उचित तथा आवश्यक शिक्षा से वंचित रहना पड़ रहा है। आज के बच्चे ही तो देश का भविष्य हैं। उचित शिक्षा प्राप्त न कर पाने के कारण देश का भविष्य खतरे में जाता नजर आ रहा है। अधिकांश गरीब बच्चे ही विद्यालय नहीं जा पाते हैं। कुछ धनी परिवार के बच्चे ही विद्यालय जा पाते हैं। शिक्षा प्राप्त करने के लिए उन्हें बहुत दूर के किसी विद्यालय में जाना पड़ता है। जिससे धन और समय दोनों ही हानि होती है।

अतः मेरा आपसे विनम्र निवेदन है कि इस क्षेत्र में बच्चों को उचित शिक्षा दिलवाने के लिए एक उच्चमाध्यमिक विद्यालय खोलने की कृपा करें।

धन्यवाद सहित

क०ख०ग०

अ०ब०स० नगर

नई दिल्ली

अथवा

सेवा में

दूरभाष अधिकारी

दूरभाष कार्यालय

रोहिणी, नई दिल्ली

दिनांक : 2 जून, 20xx

विषय : मोबाइल बिल को ठीक करने के संदर्भ में।

महोदय,

मेरा नाम नीलेश वर्मा है। मैं H-317, पीतमपुरा, रोहिणी का निवासी हूँ। मेरे मोबाइल का बिल इस माह 7000/- रुपए आया है, जो शायद 700/- रुपए होना चाहिए था, क्योंकि पिछले कई वर्षों से मैं इस नंबर का इस्तेमाल कर रहा हूँ। प्रति माह मेरा बिल लगभग इतना ही आता है। यदि मोबाइल का अधिक प्रयोग हुआ भी है तो 10 गुणा अधिक प्रयोग किया जाना संभव प्रतीत नहीं हो रहा है। निश्चित रूप से यह बिल गलत बिल है।

मेरे मोबाइल का नंबर 9xxxxxxxxx है और यह नंबर मेरे नाम पर है। आशा है कि आप मेरे मोबाइल फोन के बिल की पुनः जाँच करेंगे और इसे दोबारा बनाकर मुझे देंगे। उचित बिल आते ही मैं शीघ्र ही उसका भुगतान कर दूँगा।

धन्यवाद

भवदीय

नीलेश वर्मा

16. (क)

क०ख०ग० पब्लिक स्कूल, य०र०ल० नगर

सूचना

विद्यालय की साहित्यिक पत्रिका के लिए रचनाएँ

दिनांक : 2 जून, 20xx

आप सभी विद्यार्थियों को यह सूचित किया जाता है कि हमारे विद्यालय की वार्षिक पत्रिका अगले महीने की 19 तारीख अर्थात 19 जुलाई, 20xx को प्रकाशित होने जा रही है। अतः आप सभी विद्यार्थियों से यह अनुरोध है कि इच्छुक विद्यार्थी अपनी रचनाएँ (लेख, कविता, कहानी, निबंध आदि) पत्रिका में छापने के लिए साहित्यिक क्लब के सचिव के पास जमा करवा दें। 17 जुलाई, 20xx तक ही रचना ली जाएगी।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें– 999XXXXXXX

आदित्य शर्मा

सचिव (साहित्यिक क्लब)

हस्ताक्षर

अथवा

(ख)

'पहल' क्लब, य०र०ल० नगर

सूचना

मुफ्त नेत्र चिकित्सा शिविर

दिनांक : 2 जून, 20XX

आप सभी को यह सूचित किया जाता है कि हमारे 'पहल' क्लब की ओर से आपके मोहल्ले में गरीब लोगों के लिए एक मुफ़्त नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इसमें नेत्र जाँच चिकित्सा के साथ-साथ इसका मुफ्त इलाज भी किया जाएगा। अतः आप सभी नगरवासियों से यह अनुरोध है कि जरूरतमंद लोग इस अवसर का लाभ उठाकर इसे सफल बनाने में अपना सहयोग दें। अन्य लोगों को भी इसकी जानकारी दें।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें– 999XXXXXXX

दिनांक : 15 जून, 2023 से 22 जून, 2023 तक

समय : प्रातः 8 बजे से सायं 4 बजे तक

अध्यक्ष

गगन प्रजापति

17. (क)

चित्र प्रदर्शनी

दिव्यांग बच्चों द्वारा निर्मित चित्रों की प्रदर्शनी

बच्चों के चित्रों को देखकर इनकी कला को प्रोत्साहन दें।

बच्चों के भविष्य का निर्माण कर इनकी प्रगति में सहयोग दें।

- जीवन के यथार्थ को रंगों में पिरोती पेंटिंग्स।
- प्रकृति के सौंदर्य को जीवन से जोड़ती अद्भुत तस्वीरें।
- मानव के जीवन का दर्शन कराती बहुरंगी तस्वीरें।
- भारतीय संस्कृति तथा इतिहास की झाँकी दिखाते रंग-बिरंगे चित्र

दिनांक – 15 जून से 20 जून तक

समय – प्रातः 10 बजे से शाम 4 बजे तक

पता–प्रगति मैदान, हॉल नं. 5, दिल्ली-110009

अथवा

(ख)

मुफ्त मुफ्त मुफ्त

पुस्तक वितरण आयोजन

गरीब एवं जरूरतमंद विद्यार्थियों के लिए

पुरानी पुस्तकों का निःशुल्क वितरण

कक्षा छह से लेकर कक्षा बारहवीं तक की सभी पुस्तकें उपलब्ध हैं अपना नामांकन करवाकर तथा विद्यालय प्रमाण-पत्र देकर निश्चित पते तथा निश्चित समय पर पहुँचकर आवश्यकतानुसार पुस्तकें ले जाएँ।

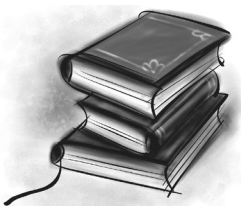

दिनांक – 4 जून से 10 जून तक

समय – प्रातः 10 बजे से शाम 4 बजे तक

पता–53, इंद्रलोक, नई दिल्ली

18. (क) **शीर्षक–'अंतरात्मा की आवाज़'**

एक नगर में एक बड़े सेठ रहते थे। उनका नाम सेठ लक्ष्मीकांत था। उनका एक नौकर था। उसका नाम सत्या था। दिनभर कठिन परिश्रम करने के बाद उसे महीने के अंत में वेतन मिलता था जिससे वह अपने परिवार का निर्वाह करता था। एक दिन उसके बेटे के बीमार पड़ने के कारण उसे पैसों की आवश्यकता पड़ी। उसने अपने मालिक सेठ लक्ष्मीकांत से रुपए उधार माँगे परंतु सेठ जी ने रुपए देने से इंकार कर दिया। वह दुखी होकर सोच रहा था कि रुपए का इंतजाम कैसे करे। दोपहर का समय था। उस समय सेठ जी के घर में वह अकेला था। तभी एक आदमी सेठ जी को ढूँढ़ता हुआ वहाँ आया। सत्या ने बताया कि सेठ जी बाहर गए हैं, शाम तक आएँगे। उस व्यक्ति ने जेब से दो सौ रुपए निकालकर रामू को देते हुए कहा कि इसे सेठ जी को देना। यह कहकर वह वहाँ से चला गया। सत्या को रुपए की आवश्यकता थी। उसने सोचा कि अभी रुपए रख लेता हूँ। दो-चार दिन में कुछ व्यवस्था कर रुपए सेठ जी को लौटा दूँगा। परंतु शाम होते-होते उसकी अंतरात्मा ने उसे धिक्कारा। उसे लगने लगा कि यह गलत है। सारी रात उसे नींद नहीं आई। सुबह होते ही वह रुपए को लेकर सेठ जी के पास गया और रुपए दे दिए। रुपए देने के बाद उसने चैन की साँस ली और परमात्मा का धन्यवाद करते हुए सोचने लगा कि रुपए का कोई और इंतजाम हो जाएगा परंतु अगर आज उसकी अंतरात्मा से आवाज नहीं आती तो वह गलती कर बैठता। शिक्षा–इस कहानी से हमें यही सीख मिलती है कि मनुष्य को अपनी अंतरात्मा की आवाज सुनते हुए गलत कार्य करने से बचना चाहिए।

अथवा

(ख) प्रेषक – abc@gmail.com

प्राप्तकर्ता – def@gmail.com

प्रतिलिपि (सीसी) – xyz@gmail.com

गोपनीय प्रतिलिपि – mno@gmail.com

विषय – एन.डी.ए. परीक्षा का प्रवेश-पत्र पाने हेतु आवदेन।

महोदय,

मेरा नाम आयूष सिंह है। मैं दिल्ली के नेताजी सुभाष प्लेस में रहता हूँ। मैं दिल्ली पब्लिक स्कूल पीतमपुरा विद्यालय के बारहवीं कक्षा का छात्र हूँ। मैंने इस वर्ष एन.डी.ए. की परीक्षा के लिए आवेदन भरा था परंतु बार-बार प्रयास करने पर भी मैं परीक्षा प्रवेश-पत्र डाउनलोड नहीं कर पा रहा हूँ। कृपया नीचे दिए गए पते पर मेरा परीक्षा प्रवेश-पत्र भेजने का कष्ट करें। आशा है कि आप मेरी सहायता अवश्य करेंगे।

इस सहायता के लिए मैं आपका आभारी रहूँगा।

पता–आयूष सिंह

नीलकंठ अपार्टमेंट, फ्लैट संख्या-55,

सेक्टर-150,

ग्रेटर नोएडा, उ०प्र०

धन्यवाद सहित

आयूष सिंह